Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

राजस्थान के क्रांतिकारियों का आजादी की लड़ाई में योगदान

Mr. Shesh Karan Charan
Ph.D. Research Scholar, Dept. of History,
Gujarat University, Ahmedabad
PhD Reg. No. 8661 Date : 30-08-2018

सारांश

"आजादी अनमोल जेना तोल ना सका ताकड़ी.... वक्त पड़्या मुख बोल शीश मांगे मावड़ी...दुश्मन रो दल देख हेमाले हेलो कियो...पूगो धर्म निरपेक्ष एक भारत वासी भोमियो"

`आजादी को रक्त से सींचना होता है और बलिदान देना होता है तभी आजादी मिलती है । आजादी के लिए क्रांति करनी पड़ती है।दुनियां के इतिहास में कई अभूतपूर्व क्रांतिया हुई है और क्रांति की धार पे गुलामी की बेड़ियों को काटा जा सकता है। यहां मैं स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान के क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में प्रकाश डालना चाहता हूं। इसके अलावा क्रांति की परिभाषा और क्रांति के जन्म के बारे में बताने का प्रयास किया गया है।

Key Words: राजस्थान के क्रांतिकारी, क्रांति की परिभाषा, क्रांति का जन्म, आजादी की लड़ाई में योगदान

क्रांति की परिभाषा क्या है?

'क्रांति' शब्द का अंग्रेजी समान्तर शब्द है-Revolution, जिसका अर्थ है- उलटना Encyclopedia of social sciences में- आमूल-चूल परिवर्तन को क्रांति कहा गया है।The Anatomy of Revolution में Crane Brinton ने लिखा है- क्रांति वर्तमान सामाजिक संरचना के प्रति मनोवृत्तियों और मूल्यों का मूल्यांतरण है।क्रांति वस्तुतः शक्ति परिवर्तन ही है।क्रांतियों के परिणाम कभी आशाजनक होते है तो कभी निराशाजनक। अपेक्षित परिवर्तन और वाछिंत सुधार लाने के लिए अहिंसक साधन अधिक उपयोगी एवं लाभप्रद होते है। इस तरह की क्रांतियां स्थाई एवं सफल भी होती है।

क्रांति का जन्म कैसे होता है?

युद्ध ,क्रांति एवं आंदोलन में क्या अंतर है?क्या आप क्रांति, आंदोलन, विद्रोह, बगावत में अंतर बता सकते हैं?"क्रांतिकारी" का क्या मतलब होता है?

क्रांति और आंदोलन में क्या समानता और असमानता हैं?क्रांति - यदि इस शब्द का अर्थ हम शब्दकोश के माध्यम से खोजने की कोशिश करेंगे तो क्रांति को लेकर के हमारे भीतर प्रथम दृष्टया एक सपाट अर्थ आता है- व्यवस्था परिवर्तन.इस अर्थ के बहुत व्यापक आयाम हैं मगर अधिकांश लोग इसे राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन के साथ जोड़कर देखते हैं, जो इस शब्द के पूरे अर्थ के साथ न्याय नहीं करता.क्रांति वास्तव में राजनीतिक साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की परिचायक है.यदि आप क्रांति को विद्रोह या बगावत जैसे अर्थों में रूढ़ करते हैं तो आप क्रांति जैसे सारगर्भित शब्द को सीमित मायनों में ही

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

इस्तेमाल कर पा रहे हैं.क्रांति का राजनीतिक विज्ञान के अलावा अन्य विषयों के संदर्भ में भी समझा जा सकता है।किसी स्थापित व्यवस्था को ज़बरदस्ती बल, अर्थ, रणनीति के द्वारा अपदस्थ करके नई व्यवस्था क़ायम करना क्रांति कहलाता हैं।सबसे मज़ेदार बात ये हैं, क्रांति को सुलभ कर देना भी लोकतंत्र का एक पक्ष हैं। लोकतंत्र से प्राप्त शक्ति से कोई भी व्यक्ति देश का नेतृत्व प्राप्त कर सकता हैं। और लोकतंत्र से भी उसको हटाया जा सकता हैं। तो लोकतंत्र इस सत्ता परिवर्तन से ज़बरदस्ती वाला भाग निकाल देता हैं।कुछ परिभाषा में, ख़ासकर लोकतंत्र से पहले की राजनीतिक शब्दावली में शक्ति संघर्ष क्रांति का का एक मूल तत्व रहा हैं।लेकिन सामाजिक परिदृश्य में, सरकारें व्यक्तियों और संस्था की मदद से सामाजिक बदलाव करती हैं और एक बेहतर विकल्प उपलब्ध करवाती हैं। इसको भी क्रांति ही कहा जायेगा जैसे भारत में हरित क्रांति। जिसने भारत की स्थिति में अभूतपूर्व बदलाव किया। ये सामाजिक क्रांति माना जायेगा।क्रांति में नई व्यवस्था को स्थापित करना भी ज़रूरी व आवश्यक हैं, वरना इसको क्रांति नहीं सिर्फ़ अराजकता माना जायेगा।

राजस्थान में क्रांति की पहली चिंगारी

इस अपूर्व क्रांति-यज्ञ में राजसत्ता के सपूतों ने भी अपनी समिधा अर्पित की। देश के अन्य केंद्रों की तरह राजस्थान में भी सैनिक छावनियों से ही स्वतंत्रता-संग्राम की शुरुआत हुई। उस समय ब्रितानियों ने राजपूताने में 6 सैनिक छावनियाँ बना रखी थी। सबसे प्रमुख छावनी थी नसीराबाद की। अन्य छावनियाँ थी- नीमच, ब्यावर, देवली (टोंक), एरिनपुरा (जोधपुर) तथा खैरवाड़ा (उदयपुर से 100 कि.मी. दूर)। इन्हीं छावनियों की सहायता से ब्रितानियों ने राजपूताना के लगभग सभी राजाओं को अपने वश में कर रखा था। दो-चार राजघरानों के अतिरिक्त सभी राजवंश ब्रितानियों से संधि कर चुके थे और उनकी जी हजूरीमें ही अपनी शान समझते थे। इन छावनियों में भारतीय सैनिक पर्याप्त संख्या में थे तथा रक्त कमल और रोटी का संदेश उनके पास आ चुका था ।

राजस्थान के क्रांतिकारीयो का आजादी की लड़ाई में योगदान

"आजादी के दीवानों के नाम तुम्हे कहा तक गिनाए,
शीश दिए हैं जिन लोगों ने आज हम उन्हें शीश नवाए।"

राजस्थान। हमेशा शूर वीर लोगो को धरती रही है। जब भी धरती की रक्षा के लिए आह्वान हुआ तब यहां के लोगो ने धरती और धर्म की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर किया। आजादी की लड़ाई के दौरान यहां के अनेकों अनेक वीर सपूतों ने जात पात और धर्म तथा क्षेत्र के बंधनों से मुक्त होकर देश की स्वतंत्रता

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

के लिए योगदान दिया है। ऐसे अनेक क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानीयो में से कुछ का योगदान को उल्लेखित किया जा रहा है।

अर्जुन लाल सेठी : जन्म – 9 सितम्बर, 1880 जयपुर।

जयपुर की महाराजा कॉलेज से स्नातक की डिग्री ली।जयपुर में जन चेतना का सूत्रपात अर्जुन लाल सेठी के द्वारा किया गया। इन्हें राजपूताने में राष्ट्रीयता का जन्मदाता माना जाता है।20वीं शताब्दी के प्रांरभिक वर्षो में राजस्थान में क्रांतिकारी गतिविधियों के सृजन का श्रेय सेठी जी को दिया जाता है। चौमू का जिलाधीश बना परन्तु बाद उन्होंने यह कहते हुए नौकरी छोड़ दी ''अगर अर्जुन लाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों के भारत से बाहर कौन निकालेगा?'' तथा जिलाधीश का पद त्याग दिया। 1905 में जयपुर में जैनशिक्षा प्रचारक समिति की स्थापना की। 1907 में सेठीजी ने जैनशिक्षा सोसायटी की स्थापना अजमेर में की थी।

1908 में इसका कार्यालय अजमेर से जयपुर लाया गया तथा इसका नाम जैन वर्धन पाठशाला किया गया, जिसमें प्रमुखतः क्रान्तिकारियों को शिक्षा दी जाती थी। जोरावरसिंह बारहठ व प्रतापसिंह बारहठ ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी। इस पाठशाला में क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण उतरप्रदेश के रासबिहारी बोस व दिल्ली के अमीरचन्द देते थे।सेठी जी द्वारा स्थापित जैन शिक्षण संस्था का उद्देश्य जैन धर्म का प्रचार करना नहीं था, वरन् यहाँ क्रांतिकारी युवाओं को प्रशिक्षण देना था।1915 में सशस्त्र क्रांति की योजना के तहत सेठी जी को धन एकत्र करने का जिम्मा सौंपा गया था। इसी के तहत एक बार सेठी जी मोतीचन्द व उसके अनुयायियों ने बिहार के आरा जिले के निजाम नामक स्थान के एक जैन संत को लूटने की योजना बनाई जिसमें उस जैन संत की हत्या हो गई।इस हत्याकाण्ड़ के कारण सेठजी को 7 वर्ष की सजा सुनाकर इन्हे दक्षिण में वैल्लूर (तमिलनाडू) जेल भेज दिया गया।1920 में रिहा होकर महाराष्ट्र पहुँचे। वहाँ बाल गंगाधर तिलक ने कहा – ''सेठ जी जैसे देश भक्त के कदमों का महाराष्ट्र की धरती पर आना एवं उनका इस तरह स्वागत होना मराठों के गौरव की बात है''

महाराष्ट्र के बाद सेठी जी गुजरात गए जहाँ वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में उनका स्वागत हुआ, तथा सेठी जी का जुलुस निकाला जाने लगा तो वहाँ के छात्रों ने घोड़ों के स्थान पर स्वंय जूतकर सेठी जी की गाड़ी को पूरे शहर में घूमाया। बारदोली से अजमेर आकर सेठी जी ने इसे अपनी कर्मस्थली का प्रमुख केन्द्र बनाया। 1922-23 में महात्मा गाँधी जी के कहने पर अजमेर क्षेत्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया।1924 में अजमेर कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के दौरान हरिभाऊ उपाध्याय ने अर्जुन लाल सेठी को हरा दिया तथा इस हार के लिए अर्जुन लाल सेठी ने महात्मा गाँधी को जिम्मेदार ठहराया। 1934 में गाँधी अजमेर

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

आये तथा स्वयं सेठीजी से मिलने उसके निवास स्थान गये। अध्यक्ष पद के चुनाव हार जाने के बाद से सेठी जी ने राजनैतिक गतिविधियों से सन्यास ले लिया तथा साम्प्रदायिक सद्भावना के कार्य करने लगे। अजमेर में दरगाह में बच्चों को अरबी/फारसी पढ़ाते हुए 23 दिसम्बर, 1941 को इनका देहान्त हो गया। लोगों ने इन्हें मुसलमान समझकर दफना दिया लेखक सुन्दर लाल ने अपनी पुस्तक भारत में अंग्रेजी राज में सेठी जी के बारे कहा है कि राजस्थान का सच्चा सपूत वह क्रांतिकारी जिसने अपने दीपक की लौ से हिन्दुस्तान की क्रांति को चमकाया आज स्वयं बुझ गया।

अमरचन्द बांठिया

अमरचन्द बांठिया का जन्म सन् 1771 ई. में बीकानेर में हुआ। इसके पिता व्यापारी थे तथा उनका व्यापार स्थल ग्वालियर था। ये पिताजी के साथ ग्वालियर चले गये।ग्वालियर राजपरिवार ने इन्हें नगर सेठ की उपाधि देते हुए राजकोष का प्रभारी बना दिया।सन् 1857 की क्रांति के समय रानी लक्ष्मी बाई और ताँत्या टोपे को धन की आवश्यकता पड़ी तो अमर चन्द बांठिया ने ग्वालियर का राजकोष व अपनी निजी सम्पति उन्हें भेट कर दी। अमर चन्द बांठिया को 1857 के क्रांति का भामाशाह कहते है।स्वतंत्रता सेनानियों को आर्थिक सहायता का पता अंग्रेजों को चल गया जिस कारण अंग्रेजों ने बांठिया को 22 जून, 1857 को ग्वालियर में ही पेड़ पर लटका कर फाँसी दे दी। अतः इसे राजस्थान का मंगल पाण्डे कहते हैं। (यह राजस्थान का 1857 की क्रांति में प्रथम शहीद था) आज भी बांठिया जी की मूर्ति उस पेड़ के नीचे स्थापित हैं।

हीरालाल शास्त्री

हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवम्बर, 1899 में जोबनेर (जयपुर) में श्री नारायण जोशी और ममता जोशी के यहाँ पुरोहित परिवार में हुआ।शास्त्री ने 10वीं कक्षा पास कर जयपुर से बी. ए. की परीक्षा उतीर्ण की तथा इसने 6 वर्षों तक सरकारी नौकरी की तथा बाद अर्जुन लाल सेठी के सम्पर्क में आने के बाद दिसम्बर, 1927 को राजकीय सेवा से त्याग पत्र दे दिया और स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गये।1930 में शास्त्री जी ने प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः नामक गीत लिखा जो बहुत उस समय बहुत लोक प्रिय हुआ।1936 में जीवन कुटीर नामक एक रचनात्मक संस्था जिसकी निवाई कस्बे में स्थापना की जो कि अपनी पुत्री शान्ता बाई के नाम से थी। इस संस्था के माध्यम से वस्त्र स्वावलम्बन की दिशा में महत्वपूर्ण शिक्षा दी जाती थी। वर्तमान में यह संस्था वनस्थली विद्या पीठ के नाम से विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला शिक्षा का एक उत्कृष्ट संस्थान है, इस संस्था में देश की ही नहीं अपितु विदेशी लड़कियाँ भी यहाँ शिक्षा प्राप्त करती है। हीरालाल शास्त्री की पत्नी श्रीमती रतन शास्त्री ने वर्षों तक इस वनस्थली विद्यापीठ की संचालिका

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

के रूप में कार्य किया।श्रीमती रतन शास्त्री ने जयपुर राज्य के सत्याग्रह के समय स्वतंत्रता सेनानियों का कुशल नेतृत्व किया। 1939 में जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह में सक्रिय भूमिका निभाई। पद्मश्री एवं पद्मभूषण से सम्मानित होने वाली राज्य की प्रथम महिला है ।जमनालाल बजाज के निवेदन से शास्त्री जी ने दूसरी बार जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना की।1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय शास्त्री व जयपुर राज्य की सरकार के मध्य जैन्टलमेन्स एग्रीमेन्ट हुआ जिसके कारण शास्त्री के नेतृत्व में जयपुर प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लिया ।30 मार्च, 1949 (राजस्थान दिवस के दिन) को शास्त्री जी राजस्थान के प्रथम मनोनित मुख्यमंत्री बने। मुख्यमंत्री पद की शपथ राजस्थान के राजप्रमुख सवाई मानसिंह द्वितीय ने दिलाई।शास्त्री जी की आत्म कथा प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र नाम से प्रकाशित हुई।16 दिसम्बर, 1974 को हीरालाल शास्त्री जी की मृत्यु हो गई।

जयनाराण व्यास

जयनारायण व्यास का जन्म 18 फरवरी, 1899 को जोधपुर के पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ।जयनारायण व्यास राजस्थान के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सामन्त शाही के विरूद्ध आवाज उठाई। जयनारायण व्यास जी के उदार चरित्र के कारण ये मास्साब, राजस्थान का लोकनायक, शेर-ए-राजस्थान, लक्कड़ और फक्कड़ तथा धुन का धनी आदि नामों से जाने जाते थे।

जालौर में प्रचलित ढोल नृत्य को सर्वप्रथम जयनारायण व्यास गुमनामी से प्रकाश में लायें।

राजस्थानी को प्रान्तीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए राजस्थानी आंदोलन क्या, क्यों और क्यों नहीं नामक एक पुस्तक का प्रकाशन किया।

3 जुलाई, 1974 को भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

ब्यावर से व्यासजी ने राजस्थानी भाषा के प्रथम राजनैतिक समाचार पत्र आगी बाण/अग्नि बाण प्रकाशित किया।

1927 में व्यासजी ने तरूण राजस्थान व 1936 में बम्बई से अखण्ड़ भारत नामक पत्र निकाले। तथा व्यास जी ने पीप नामक अंग्रेजी की पक्षिक पत्रिका का भी सम्पादन किया ।

1948 तक व्यासजी जोधपुर रियासत सरकार के मंत्री रहें। यह राजस्थान के एकमात्र मनोनित व निर्वाचित मुख्यमंत्री बने। जयनारायण जी व्यास के नाम से जोधपुर विश्वविद्यालय का नाम जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय रखा गया है।

सेठ दामोदार दास राठी

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

दामोदर दास राठी का जन्म 8 फरवरी, 1884 को पोकरण (जैसलमेर) में सेठ खींवराज राठी के घर हुआ। राठी के पिता व्यापार के सिलसिले ब्यावर आ गये तथा राठी जी भी अपने पिता के साथ ब्यावर आ गये।राठी के पिता जी ने ब्यावर में एक रूई की मील स्थापित की। लेकिन राठी जी का सम्पर्क तो क्रांतिकारियों से था तथा व्यापार में अधिक रूचि नहीं थी।

दामोदर दास ने क्रांतिकारियों की खूब आर्थिक मदद की। 21 फरवरी, 1915 की सशस्त्र क्रांति के लिए इन्हीं के आर्थिक सहयोग से गोपाल सिंह खरवा ने करीब 3000 सशस्त्र क्रांतिकारियों की सेना तैयार की अतः दामोदर दास राठी सशस्त्र क्रांति के भामाशाह के नाम से भी जाने जाते है। ब्यावर मे सनातन धर्म स्कूल, कॉलेज तथा नवभारत विद्यालय की स्थापना का श्रेय श्री दामोदर दास राठी को जाता है। दामोदर दास राठी ने 1916 में ब्यावर में होमरूल लीग की स्थापना की। 2 जनवरी, 1918 को 34 वर्ष की अल्पायु दामोदर दास राठी की मृत्यु हो गई।

जमनालाल बजाज

जमनालाल बजाज का जन्म 4 नवम्बर, 1899 को सीकर जिले के काशी का बास नामक गाँव में हुआ। जमनालाल बजाज आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी एक क्रांतिकारी जीवन व्यतीत किया। जमनालाल बजाज अपने आप को महात्मा गाँधी जी का पुत्र ही मानते थे। अतः बजाज का गाँधी जी के पाँचवे पुत्र के रूप में भी जाना जाता है।

1920 में कांग्रेस के कलकता अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ और प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया इसलिए कारण इन्हें राय बहादुर की उपाधि दी। लेकिन असहयोग आन्दोलन के तहत इस उपाधि को वापस लौटाकर देशप्रेम का परिचय दिया । 1921 में वर्धा (महाराष्ट्र) में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना कर विनोबा भावे को साबरमती से वर्धा ले आये। बजाज जी हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे, हिन्दी को ईमान की भाषा कहते थे। राजस्थान केसरी, कर्मवीर प्रताप, त्याग भूमि आदि पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में बजाज जी ने भरपुर आर्थिक सहयोग किया। बजाज जी ने दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति स्थापित की। जमनालाल बजाज स्वयं को गुलाम नम्बर चार कहते थे। वैसे भारतवर्ष में चार गुलाम होते है – पहला गुलाम – भारत, दूसरा गुलाम -देशी राजा, तीसरा गुलाम – सीकर, चौथा गुलाम – बजाज जी। 1927 में बजाज जी ने जयपुर में ''चरखा संघ'' की स्थापना कर बी. एस. देश पाण्डे को इसका कार्यभार सँभलवाया। 1938 में बजाज जी की अध्यक्षता में जयपुर प्रजामण्डल का पुनर्गठन किया गया। 1942 में महात्मा गाँधी जी ने गौ सेवा की जिम्मेदारी बजाज जी को

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

सम्भलाई। 11 फरवरी, 1942 को जमना लाल बजाज जी की मृत्यु हो गई। 4 नवम्बर, 1970 को भारत सरकार द्वारा श्री बजाज जी की स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

डूँगरजी – जवाहर जी

डूँगरजी – जवाहरजी कच्छवाहा वंश के राजपूत थे। डूँगरजी व जवाहरजी आपस में काका-भतीजा लगते थे। इनका जन्म सीकर जिले के बठोठ-पाटोदा गाँव में हुआ। इन्होंने अंग्रेजों को देश से निकालने के लिए अंग्रेजी छावनियों को लूटना शुरू किया। एक बार उन्हें धन की आवश्यकता पड़ी तो रामगढ़ सेठ घुरसामल अणतमल की बाळद को लूटा था। ये लूटा हुआ धन पुष्कर झील के घाट पर गरीबों को बाँट दिया करते थे। इसलिए इन्हें गरीबों के लोकदेवता कहते हैं। रामगढ़ के सेठों ने इन्हें रोकने के लिए अंग्रेजों की मदद मांगी। डूँगर जी का सुसराल झाड़ावास गाँव में गौड़ राजपूतों के यहाँ था। भैरों सिंह जो डूँगरजी का साला था जो कि लालच में आकर झाड़ावास से ही सोते हुए डूँगरजी को गिरफ्तार करवा दिया तथा अंग्रेजों ने डूँगरजी को कैद कर आगरा के किले में भेज दिया।

डूँगरजी के गिरफ्तार होने के 6 माह बाद ही भतीजे जवाहर जी ने इन्हें 31 दिसम्बर, 1846 को करणिया मीणा व लोटिया जाट के सहयोग से अंग्रेजों की कैद से मुक्त का दिया । 18 जून, 1847 को डूँगरजी-जवाहरजी ने नसीराबाद छावनी पर आक्रमण कर 52 हजार रूपये और घोड़े लूट लिये। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए सम्पूर्ण शक्ति लगी दी। जवाहर जी बीकानेर के महाराजा रतनसिंह के पास चले गए जिन्होंने अंग्रेजों के दबाव के बावजूद जवाहर जी को सौंपने से इनकार कर दिया।डूँगरजी ने इस शर्त पर कि उन्हें जोधपुर किले में ही रखा जाए, जैसलमेर के गिरादड़ा गाँव में आत्मसमर्पण कर दिया। जहाँ जोधपुर के तख्त सिंह ने शरण दी।

केसरी सिंह बारहठ

केसरी सिंह बारहठ का जन्म 21 नवम्बर, 1872 को भीलवाड़ा के शाहपुरा के समीप देवपुरा में हुआ इस गाँव को बारहठ जी का खेड़ा के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म कृष्णसिंह जी बारहठ के घर हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा उदयपुर में हुई। केसरी सिंह बारहठ ने पहले मेवाड़ राज्य की सेवा की तथा बाद में वे कोटा राज्य की सेवा में रहें। ये भीलवाड़ा के डिंगल कवि तथा राजस्थान के महान देशभक्त थे।

1903 में लार्ड कर्जन ने एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण के अवसर पर दिल्ली में भारतीय राजाओं का दरबार आयोजित किया जिसमें उदयपुर के महाराणा फतेहसिंह को भी आमंत्रित किया गया। फतेहसिंह उस दरबार में भाग लेने के लिए दिल्ली जा रहे थे तो दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर फतेहसिंह को

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

बारहठ के द्वारा लिखे गए 13 सोरठों का एक पत्र मिला। इस पत्र मे महाराणा फतेहसिंह के पुरखों का यशोगान करते हुए फतेहसिंह को धिक्कारा गया था। इस पत्र को पढ़ने के बाद फतेह सिंह का स्वाभिमान जाग उठा और फतेह सिंह दिल्ली में रहते हुए दिल्ली दरबार में भाग नहीं लिया। केसरी सिंह द्वारा लिखित 13 सोरठों (डिंगल भाषा) की रचना को ही ''चेतावनी रा चूँगटिया'' कहते हैं।

केसरी बारहठ ने 1910 में गोपालसिंह खरवा के साथ मिलकर वीर भारत सभा नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। 1914 में साधु प्यारेलाल हत्याकाण्ड में इन्हें मुख्य आरोपी बनाकर 20 साल की सजा हुई। केसरी सिंह को बिहार की हजारी बाग जैल में रखा गया। जैल में ही अपने पुत्र प्रतापसिंह बारहठ की शहादत की खबर सुनी तो वे बहुत प्रसन्न हुए और कहा भारत माता का पुत्र उसकी मुक्ति के लिए शहीद हो गया उसकी मुझे बहुत प्रसन्नता है।

1922 ई. में केसरी सिंह सपरिवार कोटा आ गये। कोटा के गुमानपुरा स्थित माणक भवन में आज भी इनके परिजन रहते हैं। केसरीसिंह जी का शेष जीवन कोटा में ही बीता था तथा वहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

केसरीसिंह जी के लिए रासबिहारी बोस ने उनके बारे में कहा कि ''भारत मे एकमात्र ठाकुर केसरीसिंह बारहठ ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने भारत माता की दासता की शृंखलाओं को काटने के लिए अपने समस्त परिवार को स्वतंत्रता के युद्ध में झोंक दिया। केसरीसिंह जी बारहठ ने अपनी पुत्री को पत्र लिखे हुए कहते है – तुम्हें पता है देश की आजादी के राजसूय यज्ञ में तुम्हारे परिवार जनों की आहूति से देश के इस बड़े भू-भाग मे क्रांति संभव हो सकी। केसरी जी को राजस्थान केसरी के नाम से जाना जाता है। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ-रूठी रानी, प्रताप चरित्र, राजसिंह चरित्र, दुर्गादास चरित्र आदि ग्रन्थ हैं।

बालमुकुन्द बिस्सा

बालमुकुन्द बिस्सा का जन्म 1903 में पीलवा गाँव डीडवाना तहसील जोधपुर राज्य में हुआ। डीडवाना वर्तमान में नागौर जिले में स्थित है। बिस्सा जी का जन्म एक पुष्करणा परिवार में हुआ। 1934 में बिस्सा जी ने राजस्थान चरखा एजेन्सी से खादी भण्डार की स्थापना की। 1940 में जोधपुर आन्दोलन का संचालन किया, तथा मौन साधक बन रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहे। अपनी जवाहर खादी नामक दुकान को राजनैतिक कार्यकर्ताओं की मिलन स्थली बनाई।1942 असहयोग आन्दोलन के दौरान जोधपुर में उतरदायी शासन की मांग की, इसी दौरान बिस्सा जी गिरफ्तार कर लिये गये। जेल में राजबन्दियों के दुव्र्यवहार व खराब भोजन देने के विरूद्ध बिस्सा जी ने जेल में ही भूख हड़ताल कर दी। 19 जून, 1942 को स्वास्थ्य खराब होने के कारण उनको जोधपुर के बिडम अस्पताल में भर्ती करवाया तथा इलाज के दौरान उनकी निधन हो गया।

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

रूपाजी एवं कृपा जी धाकड़

मेवाड़ राज्य के बेंगूँ ठिकाने के किसानों पर हो रहे अत्याचारों के सिलसिले में बेंगूँ के निकट गाँव गोविन्दपुरा में रूपाजी व करपा जी नामक दो किसानों ने मिलकर अखण्ड़ पंचायत का आयोजन किया, इस सभा इन किसानों द्वारा माणिक्यालाल वर्मा द्वारा रचित गीत पंछीडा गाकर किसानों को उत्साहित तथा किसानों को संगठित करने का कार्य किया इसलिए मेवाड़ राज्य की फौज के अधिकारी टेंच के विरोधी बन गये तथा 13 जुलाई, 1923 को टेंच के नेतृत्व में किसानों की सभा में गोलियां चला दी तथा इस गोली बारी काण्ड में रूपा जी व कृपाजी शहीद हो गयें। गोविन्दपुरा गाँव में इन दो शहीदों की याद में प्रतिवर्ष मेला भरता है।

गोविन्द गिरी

गोविन्द गिरी जी का जन्म 1858 में डूँगरपुर राज्य के बाँसिया ग्राम एक बणजारे के घर पर हुआ। आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण इनकी शिक्षा गाँव के पुजारी की सहायता से प्राप्त हुई। 1880 में दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर जनजातियों की सेवा में लग गये। इन्होंने 1883 में सिरोही में सम्प सभा की स्थापना की तथा भगत आन्दोलन का सूत्रपात किया तथा इस आन्दोलन से जुड़े भील जाति के लोग अपनी झोपड़ी पर सफेद झण्ड़ी लगाते थे तथा धूनी और किसान की पूजा करते थे।

17 नवम्बर, 1913 को मानगढ़ की पहाड़ी पर सम्पसभा का आयोजन हो रहा था, जिसमें मेवाड़ भील कौर ने गोलियां चलाई थी, जिनमें लगभग 1500 भील मारे गये थे, इसे राजस्थान का जलियावालां हत्याकाण्ड कहते हैं। इस गोलीकाण्ड के बाद गुरू गोविन्द गिरी और उनकी पत्नी को गिरफ्तार कर लिया तथा फाँसी सजा हुई लेकिन आदिवासियों के विरोध के कारण उन्हें दस साल की सजा हुई। सजा काटने के बाद अपना शेष जीवन गुजरात के कम्बाई नामक स्थान पर बिताया।

रामकरण जोशी

स्वतंत्रता सेनानी रामकरण जोशी का जन्म 2 अक्टूम्बर, 1912 को दौसा में हुआ तथा इन्होंने जयपुर प्रजामण्डल में 1939 से लेकर 1942 तक सक्रिय भूमिका निभाई। रामकरण जोशी जी ने बिजौलिया आन्दोलन, बेंगू आन्दोलन आदि किसान आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन तथा नमक सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान उन्हें बंदी बनाकर जेल भेजा गया। 17 जनवरी, 1983 को स्वतन्त्रता सेनानी रामकरण जोशी का निधन हो गया।

गोकुललाल असावा

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

स्वतंत्रता सेनानी श्री गोकुल लाल असावा का जन्म 2 अक्टूम्बर, 1901 को टोंक जिले के देवली कस्बे में एक माहेश्वरी परिवार में हुआ। असावा जी नमक सत्याग्रही तथा सक्रिय क्रांतिकारी एव लोकप्रिय नेता थे। असावाजी संविधान निर्मात्री परिषद् के सदस्य रहे है तथा 1948 को राजस्थान संघ के प्रधानमंत्री बनाये गये।20 नवम्बर, 1981 को गोकुल लाल असावा जी का जयपुर में निधन हो गया।

स्वामी कुमारनन्द

स्वामी कुमार का जन्म 15 अप्रेल, 1889 को रंगून में हुआ। 1910 में चीन जाने पर स्वामी जी डॉ. सेन यातसेन से मिले तथा कलकता आने पर गिरफ्तार कर लिये गये और नौ साल बाद जेल से मुक्त हुए। 1920 में स्वामी जी की नागपुर में श्री अरविन्द से भेंट हुई। सन् 1921 में स्वामी ब्यावर आये और एक विशाल किसान सम्मेलन किया। इस समय इनके पीछे पुलिस लगी हुई थी फिर भी इन्होंने अपना कार्य बंद नहीं किया। राजस्थान में इनके प्रवेश पर पाबन्दी थी फिर भी भेष बदलकर रियासत में जाते और लोगों से मिलते थे। 1948 में इन्हें गिरफ्तार कर अजमेर जेल में नजरबन्द रखा। इनका निधन 29 दिसम्बर, 1971 को हो गया।

हरिभाऊ उपाध्यय

हरिभाऊ उपाध्यय का जन्म भौंरासा ग्राम (ग्वालियर राज्य) में 9 मार्च, 1893 को हुआ तथा इन्होंने औदुम्बर तथा नवजीवन आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। उपाध्याय जी ने 1916 से 1919 तक महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ मिलकर सरस्वती नामक पत्रिका का सम्पादन किया। हरिभाऊ उपाध्याय ने 1925 में सस्ता साहित्य मण्डल की स्थापना की तथा 1927 में गाँधी आश्रम की हटुंडी (अजमेर) में स्थापना की।1945 को आपने हटुंडी में महिला शिक्षा सदन की स्थापना की। 1952 में आप मुख्यमंत्री रहे तथा 1957 से 1965 तक आप राज्य मंत्री के पदभार पर रहे। 1966 को श्री उपाध्याय जी को पदम्श्री उपाधि से नवाजा गया। 25 अगस्त, 1972 में उपाध्याय जी का देहान्त हो गया।

भोगी लाल पाण्ड्या

भोगी लाल पाण्ड्या का जन्म 13 नवम्बर, 1904 को डूँगरपुर जिले के सीमलवाड़ा ग्राम में हुआ। इन्होंने बागड़ सेवा मन्दिर नामक संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य केवल शिक्षा से सम्बधित था। रियासत सरकार ने इस संस्था को बंद करवा दिया तथा पाण्ड्या जी ने इसके स्थान पर सेवा संघ संस्था की स्थापना की। 1944 में पाण्ड्या जी ने डूँगरपुर प्रजामण्डल की स्थापना की तथा भोगी लाल जी पाण्ड्या को आदिवासियों के मसीहा के नाम से जाना जाता है। वागड़ प्रदेश के गाँधी के नाम से विख्यात इस स्वतंत्रता सेनानी ने वागड़ क्षेत्र में हरिजन सेवा व पिछडे आदिवासी समाज के उत्थान हेतु कार्य किया।1952 में

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

सागवाड़ा से विधायक चुने जाने पर टीकाराम पालीवाल के मंत्रिमण्डल में आप उद्योग एवं चिकित्सा मन्त्री 1957 तक रहे।1975 में भारत सरकार द्वारा पद्म-विभूषण से अलंकृत किया।31 मार्च, 1981 को जयपुर में इनका निधन हो गया।

गोपाल सिंह खरवा

गोपाल सिंह खरवा का जन्म अजमेर जिले के खरवा ग्राम में हुआ। राजपूताने में वीर भारत सभा के नाम एक गुप्त संगठन सक्रिय था। इस संगठन में बारहठ के साथ गोपाल सिंह खरवा ने भी महत्वपूर्ण कार्य किये।इस संगठन के माध्यम से राजपूतानें के राजपूतों को इस सभा में बड़े पैमाने पर जोड़ना ही नहीं बल्कि उनमें स्वतंत्रता की भावना को उत्पन्न कर क्रांतिकारियों का साथ देकर अपना राज्य स्थापित करने की महत्वाकांक्षा जागृत कर दी।सशस्त्र क्रांति 21 फरवरी, 1915 को निश्चित की गई। राजपूताने में राव गोपालसिंह खरवा, दामोदर दास राठी को ब्यावर और विजय सिंह पथिक को अजमेर-नसीराबाद पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। लेकिन इस योजना की भनक अंग्रेजों को लग जाने के कारण यह प्रयास क्रियान्वित नहीं हो सका। कुछ समय बाद खरवा जी को गिरफ्तार कर टॉड़गढ़ किले नजरबन्द कर दिया गया तथा वहाँ से फरार होकर ये भूमिगत हो गये, लेकिन अन्त में किशनगढ़ में इनकी पहचान हो गई तथा वापस नजरबन्द कर दिया गया तथा 1920 को इन्हें मुक्त करा दिया गया।गोपाल सिंह खरवा जी का मुख्य कार्य क्रांतिकारियों को हथियार उपलब्ध कराना था।गोपाल सिंह खरवा जी अनुशीलान समिति जुड़े थे। इन्होंने राजपूताने में वीर भारत सभा का गठन किया, इनका निधन 1939 में हुआ।भारत सरकार के संचार मंत्रालय ने 30 मार्च, 1989 में इनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

सागर मल गोपा

महान स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा जी का जन्म 3 नवम्बर, 1900 में जैसलमेर में हुआ।राजस्थान के ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिनकी जन्मस्थली ही कर्मस्थली मृत्युपर्यन्त रहीं है।सागरमल गोपा जी ने जैसलमेर में राजनैतिक चेतना उप्तन्न करने के साथ-साथ शिक्षा प्रसार पर विशेष महत्व दिया। जैसलमेर के तत्कालीन महारावल जवाहरसिंह के अत्याचारों का कड़ा विरोध किया सागरमल गोपा प्रतिबन्धित प्रजामण्डल के नेता थे। इसलिए इनका प्रवेश जैसलमेर एवं हैदराबाद राज्य में प्रतिबन्धित था क्योंकि इनकी गतिविधियाँ आक्रोशित करने वाली थी लेकिन इन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की तथा निरन्तर अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशनों में भाग लिया।सागर मल गोपा जी ने आजादी के दीवाने तथा जैसलमेर में गुण्डाराज नामक पुस्तकें लिखी तथा इसकी प्रतियाँ बटवाई।सागरमल गोपाजी

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

को 24 मई, 1941 को राजद्रोह के जूर्म में जेल में डालकर इन पर अमानवीय अत्याचार किया। (इन पर केरोसीन डालकर जलाया गया) इस कारण 4 अप्रेल, 1946 को इनका निधन हो गया।

जुगलकिशोर चतुर्वेदी

जुगलकिशोर चतुर्वेदी का जन्म 4 नवम्बर, 1904 को साँख ग्राम (मथुरा) में हुआ पढ़ाई समाप्त होने के बाद आपने शिक्षक पद पर कार्य किया।1930 में अपनी नौकरी से त्याग पत्र देकर भरतपुर प्रजामण्डल की मान्यता के लिए सत्याग्रह में भाग लेते हुए सक्रिय राजनैतिक जीवन की शुरूआत की।1940 में आप भरतपुर नगरपालिका से सदस्य बने। भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा 10 अगस्त, 1942 में गिरफ्तार हो गये। 1943 में ब्रज जया प्रतिनिधि सभा में चुने गये।1947 में भरतपुर में बेगार विरोधी आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया।10 मार्च, 1948 को जब मत्स्य संघ की स्थापना की गई उसमें आप उप-प्रधानमंत्री चुने गये। तथा पूर्ण एकीकरण के बाद प्रदेश कांग्रेस महामंत्री पद पर रहें और जयनारायण व्यास के मंत्रिमण्डल में आप को मंत्री बनाया गया।

ज्वाला प्रसाद शर्मा

ज्वाला प्रसाद शर्मा मूलतः अजमेर निवासी थे। क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आने के बाद राष्ट्रीय भावना जाग्रत हुई।1931 में रल्वे खजाना लूटने की योजना बनाई लेकिन प्रशासन को इसकी भनक लग जाने के कारण ये सफल नहीं हो सके। हमेशा क्रांतिकारियों की मदद के लिए तैयार रहते थे। परिणामस्वरूप क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर नजर रखने वाले पुलिस अधिकारी प्राणनाथ डोगरा तथा सरकारी भेदिये पर अपने प्राणों को खतरे में डालते हुए गोलियाँ चला दी।1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में वे जेल गये लेकिन कुछ दिन बाद ही फरार हो गये। और स्वाधीनता तक वे भूमिगत रहे।

पं. नरोतम लाल जोशी

पं. नरोतम लाल जोशी जी का जन्म 16 दिसम्बर, 1916 को झुन्झुनूँ में हुआ।जयपुर प्रजामण्डल के तत्वाधान में 1938 में जन आन्दोलन के प्रवर्तक रहें।1939 में आपने शेखावाटी जकात आन्दोलन को न केवल नेतृत्व प्रदान किया बल्कि सामन्तों द्वारा कृषकों का जो शोषण किया जाता था उसके विरूद्ध भी आवाज उठाई।1943 में जयपुर राज्य में नगरपालिका सुधार हेतु गठित समितियों में सक्रिय योगदान दिया।1945 में आप संविधान निर्मात्री समिति के सदस्य भी रहे।1951 में आप राजस्थान मंत्रिमण्डल में से वे विधि एवं निर्वाचन विभागों के मंत्री रहे।1952 एवं 1957 में झुन्झुनू सीट से निर्वाचित हुए और विधानसभा अध्यक्ष के पद को गौरवान्वित किया।

शोभाराम कुमावत

Vol. 04, Issue 01, Jan.-March 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

शोभाराम का जन्म 7 जनवरी, 1914 को अलवर में हुआ।1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय वकालत छोडकर रामचन्द्र उपाध्याय और कृपादयाल माथुर के साथ सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हुए।1942 में महात्मा गाँधी आमरण अनशन पर बैठे तो उनके साथ शोभाराम जी ने भी 13 दिन तक उपवास किया तथा अलवर के प्रत्येक आन्दोलन में सक्रिय रहे।18 मार्च, 1948 को निर्मित मत्स्य संघ का इन्हें प्रधानमंत्री मनोनित किया गया। वृहत राजस्थान संघ में हीरालाल शास्त्री के मन्त्रिमण्डल में इन्हें मंत्री बनाया गया। इसके बाद भी सांसद, विधायक और मंत्री बरकतुल्लाखाँ के मन्त्रिमण्डल में रहें।शोभाराम कुमावत अन्त तक राष्ट्रवादी नीतियों के पक्ष में रहे। इनका निधन सन् 23 मार्च, 1984 में हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सुमनेश जोशी, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, जयपुर ग्रंथागार
2. बीएल पनगढ़िया, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
3. उमेद सिंह इंदा, राजस्थान में स्वाधीनता संघर्ष : राज्य शासन और राजनीति, जोधपुर राजस्थानी ग्रन्थागार
4. विनीता परिहार, राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन उत्तरदाई शासन के लिए संघर्ष, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
5. प्रकाश व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, पंचशील प्रकाशन जयपुर 1997
6. बृज किशोर शर्मा, राजस्थान में किसान और आदिवासी आंदोलन,
7. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2008
8. राम प्रसाद व्यास, राजस्थान के लोक नायक, राजस्थानी साहित्य संस्थान जोधपुर 1998
9. प्रकाश पुरोहित, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम कालीन पत्रकारिता, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2007
10. विजय भंडारी, राजस्थान की राजनीति : सामंतवाद से जातिवादी के भंवर में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2007
11. आर. के सक्सेना, राजस्थान की जागीरदारी प्रथा मेवाड़ के संदर्भ में, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2006